INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

गिरिमिटिआ श्रमिकों मे लिंगानुपात।

डा0 अमित कुमार सैनी

पद– सहायक आचार्य

कार्यरत– सन्तोष कुमार महाविद्यालय, कासिमपुर, हरदोई

ई–मेल– sainy.amit@gmail.com

शोध सारांश– 1833 ई0 मे पाश्चात्य जगत से दास प्रथा के समाप्त हो जाने के बाद ब्रिटिश बागान मालिकों को सस्ती दरों पर अधिक कार्य करने वाले श्रमिकों को खोजने का प्रयास भारत मे सफल रहा, और उन्होने भारतीयों को अनुबन्ध के द्वारा श्रमिक बनाकर अपनी अन्य गन्ना कालोनियों मे प्रवास कराया, इन श्रमिकों को (Indenture labour) गिरिमिटिआ श्रमिक के नाम से जाना जाता है। दास प्रथा और गिरिमिटिआ श्रमिक प्रणाली मे व्यवहारिकता के तौर पर देखा जाए तो कोई अन्तर नही था, केवल नाम का ही अन्तर था, जिस प्रकार का दासों के साथ व्यवहार किया जाता था उसी प्रकार का गिरिमिटिआ श्रमिकों के साथ व्यवहार किया गया। समुद्री यात्रा के दौरान सैकड़ों श्रमिकों की मृत्यु हो जाना, कम पारिश्रमिक के बदले अधिक श्रम कराना, गन्ना कालोनियों मे विभिन्न प्रकार की बीमारियों के फैलने से उच्च मृत्यु दर होना, अनुबन्ध करार समाप्त होने के बाद दोबारा से अनुबन्ध करार करवाना, जातीय भेदभाव का होना, कालोनियों मे हत्या व आत्महत्या का स्तर काफी ऊँचा होने के साथ–2 प्रवास के समय स्त्री–पुशष अनुपात मे भारी अन्तर होना, इस श्रमिक प्रणाली की प्रमुख बुराई थी। प्रणाली के आरम्भिक दौर मे स्त्रियों को ले जाने की प्रथा ही नही थी, स्त्री–पुरुष अनुपात मे अधिक अन्तर होने के परिणाम बाद के वर्षों मे दृष्टिगत हुए।

की वर्ड– श्रमिक, लिंग अनुपात, स्त्री, पुरुष

शोध पत्र– यूरोप मे अठारहवीं शताब्दी के मध्य मे हुई औद्योगिक क्रान्ति ने मानव के जीवन को प्रभावित किया, उसके बाद पुर्नजागरण काल मे हुए अनेकों प्रकार के अविष्कारकों ने मानव के जीवन को एक नई गति प्रदान की थी परन्तु औद्योगिक क्रान्ति ने मानव जीवन को एक नई गति और दिशा दोनों ही प्रदान की, क्योंकि औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप नये–नये उद्योगों का विकास हुआ था। औद्योगिक क्रान्ति ने पूँजीवाद को जन्म दिया जिसने समाज की दिशा पूर्णरुप से प्रभावित कर दी थी। नये–नये उद्योगों का विकास होने से इन उद्योगों को सुचारू रूप से चलाने के लिए श्रमिकों की आवश्यकता हुई चूँकि औद्योगिक क्रान्ति का जन्म ब्रिटेन मे हुआ था अतः ब्रिटिशों ने आरम्भ मे इस कार्य को गुलामों से कराया था।

दास प्रथा के समाप्त होने के बाद ब्रिटिश बागान मालिकों को सस्ती दरों पर अधिक कार्य करने वाले श्रमिकों को खोजना था, इसी कड़ी मे पहली बार ब्रिटेन मे एक नया प्रयोग किया गया। इस नई श्रमिक प्रणाली का जन्मदाता जॉन स्कोब्ले को माना जा सकता है। जॉन स्कोब्ले जो कि ब्रिटिश और विदेशी दासता विरोधी संगठन से जुड़े थे, कुछ वर्षो के बाद कालोनी मे आये और एक नई प्रकार की दासता की खोज की[1]। इस प्रकार गिरिमिटिआ श्रमिकों को पहली बार मॉरीशस मे प्रवास कराया गया, इसके उपरान्त नेटाल, बर्मा, सीलोन, ब्रिटिश गुयाना, त्रिनिडाड, जमैका, सेन्ट ल्यूसिआ, फिजी, सूरीनाम, इत्यादि औपनिवेशिक स्थानो पर

ले जाया गया। भारतीय गिरिमिटिआ श्रमिकों को तेरह ब्रिटिश कालोनियों, पॉच फ्रेंच कालोनियों, एक डच कालोनी एवं एक डेनिस कालोनी (कुल बीस कालोनियों) मे ले जाया गया था।

डेविड नोर्थुप ने उत्पत्ति के आधार पर विभिन्न देशों मे भेजे गये 1831–1920 ई0 के मध्य गिरिमिटिआ श्रमिकों की संख्या 2,076,625 बताई है जिसमे से भारतीय गिरिमिटिआ श्रमिकों की संख्या 1,336,030 है[2]। भारत से गिरिमिटिआ श्रमिकों को ले जाने के लिए जलपोतों का प्रयोग किया जाता था, कलकत्ता एवं मद्रास उस समय के प्रमुख बन्दरगाह थे। कलकत्ता एवं मद्रास बन्दरगाह डिपो पर प्रवास करने के लिए रुके हुए गिरिमिटिआ श्रमिकों मे फैली हुई बीमारियां एवं डिपो पर ही विभिन्न प्रकार की बीमारियों से हजारों गिरिमिटिआ श्रमिकों की मृत्यु हो जाना, यात्रा के दौरान जहाजी दुर्घटना तथा बीमारियों से मरने वालों की संख्या काफी अधिक थी यह इस प्रणाली पर प्रश्न चिन्ह लगाता है कि आखिरकार यात्रा के दौरान इतनी अधिक मृत्यु–दर क्यों है?

इसके प्रमुख कारणो मे, बहुत लम्बी सामुद्रिक यात्रा का होना, जहाजों पर खुले वातावरण का न होना, पीने के पानी का स्वच्छ न होना, समुद्री जलवायु प्रवासी गिरिमिटिआ श्रमिकों के लिए अनुकूल न होना कहा जा सकता है। तीन–चार महीने की समुद्री यात्रा बहुत ही कठिन होती थी और जलपोतों पर इन भारतीय गिरिमिटिआ श्रमिकों को जानवरों के समान लादकर ले जाया जाता था जलपोतो पर बैठने का स्थान कम होने के कारण इन प्रवासी गिरिमिटिआ श्रमिकों को काफी अधिक परेशनियों का सामना करना पड़ता था। लम्बी सामुद्रिक यात्रा होने के कारण इन गिरिमिटिआ श्रमिकों मे अनेक प्रकार की बीमारियां जैसे कालरा, उल्टी, दस्त आदि फैल जाती थी जिस कारण सैकड़ों गिरिमिटिआ श्रमिक मर जाते थे। बहुत लम्बी समुद्रिक यात्रा की वजह से हजारों प्रवासी गिरिमिटिआ श्रमिकों की यात्रा के दौरान ही मृत्यु हो जाना तथा बहुत से व्यक्तियों द्वारा समुद्र मे कूदकर आत्महत्या कर लेना एवं यात्रा के दौरान सहायता सामग्री का श्रमिकों की अपेक्षा कम होना तथा यात्रा के दौरान इन श्रमिकों के साथ जलपोतों के अधिकारियों द्वारा बदसलूकी एवं महिला गिरिमिटिआ श्रमिकों के साथ अमानवीय व्यवहार करना तो एक आम बात थी। बहुत कम पारिश्रमिक के बदले अधिक से अधिक श्रम कराना, गन्ना कालोनियों मे विभिन्न प्रकार की बीमारियों के फैलने से उच्च मृत्यु दर होना, यात्रा के दौरान जलपोतों पर उच्च मृत्यु दर होना, जातीय भेदभाव का होना, कालोनियों मे हत्या व आत्महत्या का स्तर काफी ऊॅचा होना एवं प्रवसन के समय स्त्री–पुरुष अनुपात मे भारी अन्तर होना, इस गिरिमिटिआ श्रमिक प्रणाली की प्रमुख बुराइयां थी।

इस श्रमिक प्रणाली की सबसे बड़ी कमी स्त्री–पुरुष मे अनुपात थी जिस कारण इस प्रथा ने भारत से बाहर गन्ना कालोनियों मे प्रवासी भारतीय गिरिमिटिआ श्रमिकों के अन्दर चरित्रहीनता के बीज बो दिये थे, नैतिक कार्यो को पूर्ण करने के लिये चरित्रहीन स्त्रियों का प्रवास कराया गया और दूसरी ओर औपनिवेशिक कालोनियों के अधिकारियों और ओवरसीयरों ने भारतीय गिरिमिटिआ स्त्रियों के ऊपर अमानवीय अत्याचार करके भारतीयों को शर्मशार कर दिया था।

आखिरकार वे क्या कारण थे जिसके कारण महिलाओं का अनुपात इतना कम रहा था? इसके शायद दो प्रमुख कारण थे, पहला कारण था कि ब्रिटिश अधिकारी और बागान मालिक नही चाहते थे कि समान अनुपात मे प्रवास हो क्योंकि उनका मानना था कि समान अनुपात मे प्रवास कराने से अधिक संख्या मे व्यक्तियों को लाना पड़ेगा जिससे कालोनियों मे जनसंख्या का भार बढ़ जायेगा और यदि महिलाऐं खेती मे कार्य नही करेगीं तो इनको पॉच साल तक निःशुल्क मे रहने–खाने को क्यों दिया जाए और यदि महिलाओं के स्थान पर पुरुष आयेंगे तो वह खेती–बाड़ी मे कार्य करेगे, दूसरा कारण था कि ब्रिटिश अधिकारी और बागान मालिक कालोनियों मे प्रवास के लिये बीस वर्ष से तीस वर्ष के आयु के मध्य की युवतियों को प्राथमिकता

प्रदान कर रहे थे जो कि भारत जैसे सामाजिक देश मे मुश्किल था इस कारण महिलाओं का प्रतिशत कम रहा है।

देमेरारा मे ग्लैडस्टोन ने व्यक्त दिया था कि– यदि महिलायें पुरुषों के साथ मिलकर खेतों मे कार्य करेगी तो ठीक है और यदि महिला कुली यहॉ पर निष्क्रिय रहेगीं तो इतने लोगों का प्रवास कराना निरर्थक ही होगा, उन्होने आगे कहा कि तीन पुरुषों पर दो महिलायें अथवा यदि आवश्यक हो तो समान संख्या मे; लेकिन यदि वे यहॉ पर खेतों मे कार्य नही करेगी तो नौ पुरुषों पर एक महिला अथवा दस पुरुषों पर एक महिला का अनुपात खाना पकाने और कपड़े साफ करने के लिये फ्रांस के टापू पर बहुत अधिक है[3]।

नियोक्ता बीस वर्ष से तीस वर्ष आयु के मध्य की महिलाओं को प्राथमिकता प्रदान कर रहे थे। परन्तु इस आयु के मध्य की महिलाओं को अधिक से अधिक खोजना भारत मे बहुत आसान काम नही था, भारतीय महिलाओं के बारे मे यूरोपियन दृष्टिकोण के अनुसार वह सोच रहे थे कि– "भारत मे मजदूर वर्ग की सम्मानजनक महिलाऐं विदेशों मे कार्य करने को नही जायेंगी"[4]। महिलाऐं, जब स्वतंत्र रुप से प्रवास कर रही हों तब तीस वर्ष की आयु से अधिक की नही होनी चाहिए, बीस वर्ष से कम आयु की महिलाओं को वरीयता प्रदान थी, परन्तु जब सम्पूर्ण परिवार प्रवास कर रहा है तब उस स्थित मे परिवार की सभी महिलाओं को प्रवास करने की छूट थी, फिर चाहे वे किसी भी उम्र की हों [5]।

रंगून के डिप्टी कमिश्नर ने अपनी रिपोर्ट मे प्रदर्शित किया है कि कुल चार सौ चालीस महिलाऐं कोकंण से आई, उसमे केवल तेईस सोलह वर्ष की आयु से कम की थी, दो सौ चौरानवे सोलह से इक्कीस वर्ष की आयु के मध्य की थी और इक्कीस वर्ष की आयु से अधिक की दो सौ नवासी महिलाऐं थी [6]। मॉरीशस को जिस समय भारत से कुली भेजना प्रारम्भ हुआ था उस समय स्त्रियों को ले जाने की प्रथा नही थी[7]। मॉरीशस मे 1 अगस्त 1834 ई0 से अक्टूबर 1838 ई0 तक कुल 12,994 गिरिमिटिआ श्रमिकों मे केवल 198 अर्थात 1.52 प्रतिशत ही महिलाऐं थी[8]। कुछ वर्षो के बाद यह प्रतिशत थोड़ा सा बढ़ा है, 1 अगस्त 1846 ई0 को 48,935 गिरिमिटिआ श्रमिकों मे 7,310 अर्थात 14.93 प्रतिशत महिलाऐं थी [9]। अक्टूबर 1843 ई0 मे प्रोटेक्टर ऑफ इमिग्रेशन की रिपोर्ट मे कहा गया कि कालोनी मे श्रमिकों की आवश्यकता है जिसे पूर्ण किया जाऐ, लगभग 29,000 श्रमिक यहॉ पर भेजे गये जिसमे 2,700 महिलाऐं थी और 700 बच्चे थे[10]।

विभिन्न कालोनियों मे भारतीयों प्रवासियों मे पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों की संख्या[11]

कालोनी का नाम एवं वर्ष	कुल प्रवासियों की संख्या	पुरुषों की संख्या	स्त्रियों की संख्या	बच्चों की संख्या	पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों का प्रतिशत*
मॉरीशस, 1842–1870 ई0	351,401	243,853	63,459	44,089	69.39, 18.05, 12.55
गुयाना, 1845–1870 ई0	79,691	53,323	16,983	9,385	66.91, 21.31, 11.78
त्रिनिडाड, 1845–1870 ई0	42,519	28,030	9,280	5,209	65.92, 21.82, 12.25
जमैका, 1845–1870 ई0	15,169	10,022	3,233	1,914	66.06, 21.31, 12.61
नेटाल, 1860–66 ई0	6,448	4,116	1,463	869	63.83, 22.68, 13.47
रीयूनियन, 1861–69 ई0	15,005	10751	2939	1315	71.64, 19.58, 8.77

सभी औपनिवेशिक गन्ना कालोनियों मे जाने वाले प्रवासियों मे महिलाओं का प्रतिशत अलग–अलग रहा था परन्तु यह 20–50 प्रतिशत के मध्य ही रहा है जिसे कभी भी बढ़ाने का प्रयास नही किया गया था।

मॉरीशस मे 61 वर्षों मे आने वाले पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का प्रतिशत क्रमशः 73.45, 16.75 एवं 9.80 रहा है, यदि 1911 ई0 मे तमिल श्रमिकों मे पुरुषों और महिलाओं के अनुपात की तुलना की जाये तो (234,594 पुरुष, और 205,708 महिलाऐं) यह साबित होता है कि प्रत्येक वर्ष कम महिलाओं को प्रवास कराया गया [12]।

गिरिमिटिआ श्रमिकों के रुप मे भारत से गन्ना कालोनियों मे मजदूरी करने के लिए पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं ने भी प्रवास को अपनाया था जिसमे प्रत्येक धर्म व जातियों की स्त्रियां सम्मिलित थी। उत्तर भारत की ओर से जाने वाली स्त्रियों मे 4.1 प्रतिशत ब्राह्मण, 9.0 प्रतिशत क्षत्रिय, 3.0 प्रतिशत बनिया, 31.4 प्रतिशत मध्यम वर्ग की, 29.1 प्रतिशत निचली जातियों से, 2.8 प्रतिशत आदिवासी और 16.8 प्रतिशत मुस्लिम [13]। देमेरारा, त्रिनिडाड, जमैका, फिजी, सूरीनाम इन पॉच कालोनियों मे 1909 ई0 मे जाति के आधार पर स्त्रियों का प्रतिशत निम्नलिखित रहा है– ब्राह्मण एवं उच्च्व जाति के कुल 964 प्रवासियों मे से 264 महिलाऐं (27.38 प्रतिशत), एग्रीकल्चरिस्ट के 2,575 प्रवासियों मे से 628 महिलाऐं (24.38 प्रतिशत), आर्टीशियन के 715 प्रवासियों मे से 209 महिलाऐं (29.23 प्रतिशत), निचले वर्ग के कुल 3,033 प्रवासियों मे से केवल 1,002 महिलाऐं (33.05 प्रतिशत), मुस्लिम धर्म के कुल 1,395 प्रवासियों मे से केवल 463 महिलाऐं (33.18 प्रतिशत) एवं ईसाईयों मे कुल 04 मे से 02 महिलाऐं (50 प्रतिशत) ने प्रवास किया था [14]।

फिजी की सन् 1915 की रिपोर्ट मे लिखा है कि 31 दिसम्बर को स्वतंत्र हिन्दुस्तानी पुरुषों और स्त्रियों की संख्या मे 8:1 का संबंध था [15]। नेटाल को 1860 से दिसम्बर 1886 ई0 तक कलकत्ता एवं मद्रास से क्रमशः 17,131 व 17,678 पुशषों ने उत्प्रवास किया जबकि इसी दौरान कलकत्ता एवं मद्रास से क्रमशः 5,187 व 5,419 महिलाओं ने उत्प्रवास किया जो कि 3:1 का ही अनुपात था[16]।

गिरिमिटिआ श्रमिक प्रणाली के आरम्भ होने से लेकर अंत होने तक भारतीय महिलाओं का प्रतिशत वेस्टइंडीज, फिजी और नेटाल मे 100 पुरुषों पर 40 महिलाओं तक ही स्थिर रहा है (मॉरीशस मे यह अनुपात 100:33 रहा है)[17]। इतनी कम संख्या मे महिलाओं का उत्प्रवास कराया जाना और ऊपर से औपनिवेशिक गन्ना कालोंनियों मे इन महिला श्रमिकों के साथ अमानवीय अत्याचार किया जाना भारतीय प्रवासी महिलाओं के समक्ष एक बहुत बड़ी समस्या थी। अमानुषिक अत्याचारों के विषय मे बर्टन ने लिखा है– असभ्य और जवान ओवरसीयर जो कि आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के होते थे, खूबसूरत हिन्दुस्तानी स्त्रियों पर मनमाने अत्याचार करते थे और अगर ये स्त्रियॉ मना करती है तो उनको और उनके पति को अत्यन्त दुखः देते है कभी–कभी दवाखाने के कम्पान्डर किसी भारतीय स्त्री को एक बंद कमरे मे बुला लेते है और यह बहाना करते है कि आओ तुम्हारी डाक्टरी परीक्षा करें चाहे वह विरोध करे और कहे कि मुझे कोई बीमारी नही है मै नही आना चाहती पर तब भी उसे बलात् कोठरी मे ले जाते फिर अपनी कामेच्छा पूर्ण करने के लिए अत्यन्त असभ्यता के साथ उस पर पाशविक अत्याचार करते है अथवा उसे इसलिए तंग करते है कि वह एक ऐसे भारतवासी के विरुद्ध गवाही दे दे जिससे कि उनकी कुछ अनबन हो गई है। यह भी सुना गया है कि स्त्रियॉ वृक्षों मे एक कतार मे बांध दी गई है और उनके छोटे–छोटे बच्चों के सामने उन पर कोड़े फटकारे गयें है[18]।

सूरीनाम और गयाना मे भारतीय श्रमिकों एवं महिला गिरिमिटिआ श्रमिकों की दशा का वर्णन मुंशी रहमान खान ने अपनी चौपाइयों[19] मे कुछ इस प्रकार किया है –

भारतवासी यहॉ पर आए। धर्म कर्म निज साथहिं लाऐ। 1
पॉच वर्ष कन्तराक पिताई। सब से राखी सत्य मिताई। 2
छोड़े धर्म कर्म आचारा। ग्रहण कीन्ह यूरोप व्यवहारा। 13
ब्याही तिरिया छोड़े घर मे। हबसिन राखहिं जाकर पुर मे। 18
ऐसा करत लाज नहिं आवत। भला होत हब्शी जन्मावत। 20

सी0 एफ0 एन्ड्रयूज ने लिखा है कि जब मै फिजी मे अलग–अलग कुली लाइनों मे जाता हूॅ अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जहॉ भारतीय बसे हुये है, यहॉ की महिलाओं की स्वतंत्रता के रवैये का मामला था जिसने मुझे सबसे अधिक व्यथित किया था। इस विशेषता ने मुझे सचमुच बहुत दुखी किया था, क्योंकि फिजी मे भारतीय महिलायें अपने जीवन का बहुत कुछ खो चुकी थी, मैने जो भारत से आते समय देखा था उसका आधा सौन्दर्य फिजी मे गायब हो चुका था[20]।

भारत से बाहर गन्ना कालोनियों मे गिरिमिटिआ श्रमिक के रुप मे जाने वाली महिलाओं की समस्याओं के विषय मे सी0 एफ0 एन्ड्रयूज और पिर्यसन ने अपनी रिपोर्ट मे लिखा है कि– भारतीय स्त्रियॉ जो इस गिरिमिट प्रथा मे बंधकर फिजी जाती है उनकी दशा बहुत ही शोचनीय है ग्रामीण स्त्रियॉ सीधी–सादी होती है उनसे यह कहा जाता है कि फिजी मे उन्हे कम से कम नौ आना रुपया प्रत्येक दिन मिलेगें और खेतों पर काम करना होगा, वह समझती है कि फिजी मे भी खेतो पर उन्हे वैसे ही काम करना होगा जैसे कि वह यहॉ पर (भारत मे) करती है और उनके बाल–बच्चे उनके पास से दूर नही रहते, पर फिजी जाकर मामला कुछ और ही निकलता वहॉ पर इन विचारी स्त्रियों को अपने बाल–बच्चों को कुली लेन मे ही छोड़कर पूरे दिन लगातार खेतों मे काम करना पड़ता है। उन्हे इतना भी अवसर नही दिया जाता था कि अपने बाल–बच्चों और पतियों के लिए भोजन बना सकें, उन्हे यह भी नही बताया जाता था कि पॉच वर्ष तक कुली लेन मे लज्जा रहित और अशिष्ट स्थित मे रहना पड़ेगा और यहॉ से कही दूसरी जगह रहने के लिए जाना असम्भव होगा [21]।

भारतीयों का कालोनियों मे जो नैतिक पतन हो रहा था उसके जिम्मेदार स्वयं भारतीय भी कम नही है। एक बार फिजी मे श्रमिकों ने चीनी मिलों के मालिकों से वेतन बृद्धि के लिये कहा था परन्तु वेतन बृद्धि नही की गई थी, इसके बावजूद भी श्रमिक काम पर धीरे–धीरे वापस चले गये थे। सी0 एफ0 एन्ड्रयूज ने बताया कि इन लोगों के काम पर वापिस चले जाने की वजह यह है कि ऊख पेरने के दिनो मे 6 महीने के लिए स्वतंत्र भारतवासी चीनी मिलों पर काम करने के लिए आते है, उनका मुख्य उद्‌देश्य यही होता है कि वे कुली लेनो की औरतो के साथ व्याभिचार करें इन औरतों मे से कितनी ही तो हाल मे ही फिजी पहुंची हुई होती है। मैने कई लोगों से पूछा सभी ने यही जबाब दिया हॉ यह सही है। लोगों ने मुझ से कहा कि बिन ब्याहे स्वतंत्र भारतवासियों के लिए सबसे आकर्षक बात यह है कि वहां उन्हे स्त्रियों के साथ सहवास करने का अवसर प्राप्त होता है ये लोग थोड़े दिनो के लिए यहां आते है और अपना कार्य करके वापिस चले जाते है मैने स्वतंत्र जॉच की और सब सही पाया[22]।

स्त्री–पुरुषों के अनुपात मे भारी कमी होने के कारण एक महिला अनेकों पुरुषों के साथ सहवास करती थी जिस कारण यौन जनित रोग जैसे सुजाक और सिफलिस होना तो आम बात ही थी। हिन्दुस्तानी आदमी कुली लेनो के लिए एक शब्द का उपयोग करते है यानी कस्बी घर (वेश्यागृह) यह बात निश्चित है कि भारतीय पुरुष कुली लेनो को वेश्यागृह ही समझते है और तदानुसार ही उसका उपयोग करते है[23]। जब एक भारतीय गिरिमिटिआ महिला श्रमिक, तीन गिरिमिटिआ पुरुष श्रमिकों के साथ शारीरिक संम्बन्ध बनायेगी, इसके साथ–साथ बहुत से बाहरी व्यक्तियों के साथ भी सम्बन्ध रखेगी तो इसके परिणाम स्वरुप योनजनित रोग जैसे– सुजाक एवं सिफलिस तो फैलना स्वाभाविक ही था[24]।

जे0 डब्लू0 बर्टन ने लिखा है कि– स्त्रियों की कमी से और इस कमी की वजह से जो दुष्चरित्र पैदा होते है उनसे बहुत से लड़ाई–झगड़ें हुआ करते है जो प्रचण्ड भेंट–चोट और हत्यायें हुआ करती है लगभग सभी का कारण स्त्रियों की कमी है[25]। भारतीय श्रमिकों द्वारा अंग्रेज ओवरसीयरों पर जो हमले होते थे उनका भी प्रमुख कारण स्त्रियॉ ही होती थी क्योंकि यह अंग्रेज ओवरसीयर प्रत्येक भारतीय स्त्री को गलत नजर से ही देखते थे, हॉलकि सभी ओवससीयर इस प्रकार के नही होते थे परन्तु बुरी नजर से देखने वालों

की संख्या अधिकतम थी। जे0 डब्लू0 बर्टन ने फिजी ऑफ टुडे मे लिखा है कि– प्रायः गोरों का भारतीय स्त्रियों के साथ के जो अनुचित संम्बन्ध होता है वही अभिद्रोह का कारण होता है, कोई–कोई अंग्रेज यह ख्याल करते है कि एक काले आदमी की स्त्री को अपने शरीर पर कोई अधिकार नही है क्योंकि वह काली है, और कुछ गोरे लोग ऐसे भी है जिनकी निगाह मे कोई भी स्त्री पवित्र नही है। अगर कोई स्त्री या उसका पति सतीत्व बेचने से इंकार करे तो यह गोरे लोग इस बात पर विश्वास ही नही करते है। हर्ष है कि ऐसे लोगो की संख्या फिजी मे कम हो रही है [26]।

ब्रिटिश बागान मालिक एवं अधिकारी भारतीय प्रवासी महिला श्रमिकों पर अनेकों प्रकार के अमानवीय अत्याचार करते थे, भारत से गिरिमिटिआ श्रमिक के रुप मे अधिकतर स्त्रियों ने स्वतंत्र ही प्रवास किया था जिस कारण उनके बचाव पक्ष में गन्ना कालोनियों मे कोई भी नही था, और जो स्त्रियां अपने पतियों के साथ प्रवास करके गई थी उनके पति भी दिन भर उनके साथ नही रहते थे। सन् 1912 में प्रोटेक्टर ऑफ इमिग्रेन्ट ने जो रिपोर्ट लिखी थी, उसमे उन्होने लिखा था कि कुल 2,274 स्त्रियों मे जो उपनिवेशों को भेजी गई थी 1,580 स्त्रियां यानी 69.45 फीसदी स्त्रियां असहाय या बेवारिस थी[27]। ब्रिटिश ओवरसीयर अधिकारी पुरुषों एवं महिला श्रमिकों को अलग–अलग स्थान पर कार्य देते थे और इस प्रकार अकेली महिला गिरिमिटिआ श्रमिक को पाकर उसके साथ अमानवीय व्यवहार करते थे।

ब्रिटिश ओवरसीयर अधिकारियों द्वारा भारतीय गिरिमिटिआ श्रमिक महिलाओं पर किये गये अत्याचारों को नही भुलाया जा सकता है फिर चाहे वह कुंती पर हो या नारायणी पर हो। कुंती वर्तमान के उत्तर प्रदेश मे गोरखपुर जिले मे लखुआपुर गॉव की रहने वाली थी जिसे आरकातियों ने बहका कर फिजी भेज दिया था जहॉ पर सरदार और ओवरसीयर ने उसे एक दिन सभी श्रमिकों से अलग दूर स्थान पर कार्य दिया जिससे कि कोई गवाह भी न मिल पाये और यदि वह चिल्लाये तो कोई उसकी आवाज भी कोई न सुन पाये और इस प्रकार उन्होने उसके साथ अमानवीय अत्याचार करने का प्रयास किया परन्तु वह किसी प्रकार वहॉ से भाग निकली और नदी मे कूद गई, परन्तु एक युवक ने उसे डूबने से बचा लिया था, कुंती ने जब यह बात गोरे स्वामी को बताई तो उसने सुनने से इन्कार कर दिया, दो दिनों तक वह काम पर नही गई और तीसरे दिन उसे जिस स्थान पर काम दिया गया उससे एक मील की दूरी पर उसके पति को काम दिया गया जहॉ पर उसके पति को खूब पीटा गया था।

औपनिवेशिक गन्ना कालोनियों के स्थाई निवासी भी भारतीय स्त्रियों के कष्टों को देखकर व्यथित होते थे। फिजीयन कहा करते थे– इंडिया बहुत बुरा देश है जहॉ की स्त्रियॉ मजदूरी करने के लिए परदेश मे फिजी को आती है और यहॉ आकर अनेक अत्याचार सहती है, जैसे अत्याचार तुम्हारी इंडियन स्त्रियों पर किए जाते है वैसे यदि हमारी स्त्रियों पर किए जाऐं तो करने वालों को हम जड़ से मिटा दें[28]।

फिजी मे 1884 ई0 से 1920 ई0 तक 300 प्रवासी भारतीयों ने खुदकुशी कर ली लोगों मे यह धारणा घर कर गई थी कि भारतीय औरतें पतित थी– शादी रचाई गहने तोहफे लिए और फिर किसी दूसरे के साथ भाग लीं, लोगों को यकीन था कि इससे आदमी टूट जाता था कि अपनी जान ले लेता था, यह भी मत था कि आत्महत्या का कारण सैक्सुअल जैलिसी था[29]। महिलाओं की कमी थी और सभी श्रमिकों को महिलाओं की कमी खलती थी जिस कारण बहुत से श्रमिक, महिलाओं को धन का लालच देकर अपनी तरफ कर लेते थे ,बहुत सी महिलाऐं लालची स्वभाव की होने के कारण उनकों जिन पुरुषों के पास अधिक धन मिलता दिख रहा होता था वह उनके पास चली जाती अथवा उनसे शादी कर लेती थी जिससे आदमी टूट जाता था और शराब और नशे की लत डाल लेता था और बाद मे आत्महत्या कर लेता था। हमारी महिलाओं ने सभी शर्म–हया त्याग दी है, वे पतियों को ऐसे बदल रही है जैसे कि कपड़े बदले जाते है [30]।

सभी औपनिवेषिक गन्ना कालोनियों मे हत्या का प्रतिशत भी काफी अधिक रहा है जिसके अनेक कारण रहे है परन्तु अधिकतर गिरिमिटिआ श्रमिकों मे हत्या भी महिलाओं के कारण ही अधिक होती थी, गिरिमिटिआ श्रमिकों मे स्त्रियों की कमी होने के कारण अक्सर महिलाओं के कारण झगड़े होते रहते थे इन झगड़ों का प्रमुख कारण शारीरिक संबन्ध होते थे जिसमे वे क्रोधित होकर एक–दूसरे की हत्या कर देते थे। औपनिवेषिक गन्ना कालोनियों मे अविवाहित प्रवासी भारतीय गिरिमिटिआ श्रमिकों की संख्या अधिक थी। ब्रिटिश गुयाना मे 1911 मे 67,887 अर्थात 53.7 प्रतिशत बिना शादी–शुदा एवं 53,795 अर्थात 42.5 प्रतिशत शादी–शुदा थे जबकि 4,835 विधवा या विधुर थे। 1921 मे 67,560 अर्थात 54.1 प्रतिशत बिना शादी–शुदा एवं 51,117 अर्थात 40.9 प्रतिशत शादी–शुदा थे जबकि 6,261 विधवा या विधुर थे[31]। यह आंकड़े इस बात को प्रदर्षित करते है कि कालोनियों मे अविवाहित व्यक्तियों की संख्या बहुत ही अधिक थी, और इन्हे प्राकृतिक संबन्ध बनाने के लिये अन्य महिलाओं की सहायता लेनी पड़ती थी, जिस कारण श्रमिकों मे जैलसी होना सामान्य बात थी।

इस प्रकार कम स्त्री–पुरुष अनुपात कारण कालोनियों मे अनेक समस्यायें उत्पन्न हुई, स्त्रियों की कमी के कारण प्रवासी भारतीय गिरिमिटिआ पुरुषों के मध्य भारी संख्या मे लड़ाई–झगड़े, हत्या, आत्महत्या, और जननेन्द्रियों से संबन्धित बीमारियॅा हुई थी। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि गन्ना कालोनियों मे प्रवासी भारतीय गिरिमिटिआ स्त्री–पुरुष कलंकपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य थे।

---

[1] अरूणाचलम्,कृष्नन,इंडियन एन आइडियल लेबर आर स्लेव,पेन्टागॉन प्रेस न्यू दिल्ली, 2009,पृ0सं0 19,सैनी,अमित कुमार, गिरिमिटिआ श्रमिक प्रणाली का उन्मूलनः ब्रिटिश अधिकारियों एवं गैर अधिकारियों का योगदान 1890–1920,(प्रकाशित शोध ग्रन्थ) बुक रिवर्स,लखनऊ,2022,,पृ0सं0,11

[2] नोरथुप, डेविड, इंडन्चर लेबर इन दि एज आफ इम्पीरिएलिज्म 1834–1922 , कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस,1995,अपेन्डिक्स A-1

[3] स्कोब्ले,जॉन,हिल कुली,ए ब्रीफ एक्सपोजर ऑफ दि डिप्लोरेबल कण्डरसन ऑफ दि हिल कुली इन ब्रिटिश गुयाना एण्ड मॉरीशस एण्ड नेफेरियस मीन्स बाई विच दे वर इन्डूयूस्ड टू रिपोर्ट टू दीज कालोनीज, विल्सन एन्टी–स्लेवरी कलेक्शन,1840,द्वारा उद्धृत, रिपोर्ट आफ दि ट्रुथ एण्ड जस्टिस कमीशन,वोल्यूम प्रथम,नवम्बर,पृ0सं0 152

[4] कालोनियल सेक्रेटरी टू सी0 एन्डरसन पोर्ट ऑफ इमिग्रेन्ट 362,द्वारा उद्धृत,रिपोर्ट आफ दि ट्रुथ एण्ड जस्टिस कमीशन,पूर्वोक्त, पृ0सं0 154

[5] लेटर फ्राम जी0एफ0डिक कालोनियल सेकेरेटरी टू दि सी0 एन्डरसन एक्टिंग प्रोटेक्टर आफॅ इमिग्रेन्ट्स,चीफ सेकेरेटरी ऑफिस,सितम्बर15,1943

[6] घोष, लिपी,चर्टजी,रामकृष्ण(सम्पादक),इंडियन डाइस्पोरा इन एशियन एण्ड पैशिफिक रीजनस् कल्चर, पीपुल, इन्ट्रेक्शन, रावत पब्लिकेशन्स्, नई दिल्ली, 2004, पृ0सं0 136

[7]सन्यासी,स्वामी भवानी दयाल,प्रवासी की आत्मकथा,राजहंस प्रकाशन,दिल्ली,प्रथम संस्करण,1947,पृष्ठ सं0 222

[8] हिल कुली,12 फरवरी 1842,दि हाउस आफ कॉमन्स,,पृ0सं0 195

[9] एडवर्डस,एस0वी0दे0वर्ग,हिस्ट्री ऑफ मॉरीशस 1507–1914,ईस्ट एण्ड वेस्ट लिमिटेड लंदन,1921,पृ0सं0 77

[10]एन्डरसन टू जी0जी0 27 अक्टूबर 1843 पृ0सं0 364, द्वारा उद्धृत, रिपोर्ट आफ दि ट्रुथ एण्ड जस्टिस कमीशन ,पूर्वोक्त,पृ0सं0 153

[11] जीओघजन,नोट ऑन इमिग्रेषन फ्राम इंडिया,कलकत्ता,1783,पृ0सं078–82, सैनी,अमित कुमार,उपरोक्त, पृ0सं053

[12] जी0ओ0 न0 214, 5 मार्च 1917 गवरेन्मेन्ट ऑफ मद्रास होम डिपार्टमेन्ट (मिसलिनिएस), रिपोर्ट आन इंडियन लेबर इमिग्रेटिंग टू सीलोन एण्ड मलाया पृ0सं0 03

[13] लाल,बृज वी0,चलो जहाजी,चलो जहाजी ऑन ए जर्नी थ्रो इंडन्चर इन फिजी, आस्ट्रेलियन नेषनल यूनिवर्सिटी ई–प्रेस, 2012पृ0सं0 197,

[14] बैंक,सी0,रिपोर्ट ऑन इमिग्रेशन फ्राम दि पोर्ट आफ कलकत्ता टू ब्रिटिश एण्ड फोरिजन कालोनीज 1909,दि बंगाल सीक्रटिएट बुक डिपोट कलकत्ता 1910,अपेन्डिक्स viii , no.3 , as cast and religion ,सैनी, अमित कुमार,उपरोक्त,पृ0सं051

[15] उक्त, पृ0सं0 18

[16] रिपोर्ट आफ दि इंडियन इमीग्रेन्ट कमीशन 1885–87,पी0 डेविस एण्ड संन्स, पृ0सं0 71–72

[17] ह्रयुगुटे, ले–टिओ–केन पिनेओ,ल्यूरेड अवे, दि लाइफ हिस्ट्री आफ केन वर्कर्स इन मॉरीशस (मोका मॉरीशस महात्मा गॉधी इंस्टीटयूट 1984) टेबल नं0 1 A ,फ्राम दि अदर फीगर्स, शी टेबल नं0 3:1 आफ दि चैप्टर एण्ड लाल ,गिरिमिटिआ ,PP 97–103, द्वारा उद्धृत,नोरथुप ,डेविड, पूर्वोक्त पृ0सं0 77

[18] नोरथुप,डेविड, उक्त पृ0सं0 22,

[19] सूरीनाम–डच गयाना मे भारतवासियों की दशा पर मुंशी रहमान खान की शीर्षक(शुभ शिक्षा) के अर्न्तगत 1,2,13,18,20 वीं, सैनी, अमित कुमार, उपरोक्त, पृ0सं059–60

[20] दि मार्डन रिव्यू, वोल्यूम xxviii , नम्बर एक, जुलाई 1920, पृष्ठ सं0 381

[21]एक भारतीय हृदय,पूर्वोक्त पृ0सं0 84–85 प्रथम खण्ड

[22] सी0एफ0 एन्ड्रयूज,फिजी मे भारतीय मजदूर, अनुवादकर्ता एक भारतीय हृदय, भारत बन्धु कार्यालय,हाथरस,1918 (चतुर्वेदी संकलन,भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार,नई दिल्ली) पृष्ठ सं0 21,

[23] उक्त,पृष्ठ सं0 22

[24] वैज,एस0ए0,इंडियन अब्रोड, सेकेण्ड एडिसन, दि इम्पीरियल इंडियन सिटीजनशिप अशोंसिएशन,बाम्बे,1927,पृष्ठ सं0 560

[25] बर्टन,जे0 डब्लू,दि फिजी ऑफ टुडे,चार्ल्स एच0 कीले,लंदन, 1910,पृ0सं0316,एक भारतीय हृदय,पूर्वोक्त प्रथम खण्ड पृ0सं0 121

[26] उक्त,पृ0सं0, 290,एवं उक्त प्रथम खण्ड,पृ0सं0 152

[27]एक भारतीय हृदय,पूर्वोक्त पृ0सं0 80

[28] सनाढ्य,तोताराम,भूतलेन की कथा,गिरिमिट के अनुभव,सम्पादक बृज विलास लाल, आषुतोष कुमार,योग्रेन्द्र यादव,राजकमल प्रकाषन दिल्ली, 2012,पृ0सं0 18

[29] उक्त पृ0सं0 23

[30] एन्ड्रयूज,एण्ड पियर्सन, इंडन्चर लेबर इन फिजी एन इंडिपेन्डेन्ट इन्क्वायरी, फरवरी 1916पृ0सं0 34

[31] सेन्सेस रिपोर्ट आर्फ ब्रिटिष गुयाना,1931,सेन्सेस कमिष्नर आफिस जार्जटाउन देमेरारा,ब्रिटिष गुयाना, 23 दिसम्बर 1931 पृ0 सं0 xlviii

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM